शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 नवम्बर 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

संत रविदास की वाणी में प्रतीक योजना

डॉ.सुरेश कुमार
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय
उकलाना मंडी, हिसार
हरियाणा, भारत

शोध संक्षेप

प्रतीक का शाब्दिक अर्थ है प्रतीक, चिह्न, निशान। प्रतीक किसी भी विषय को सजीव व जीवंत बनाने का महत्वपूर्ण साधन है। संत कवि रविदास ने प्रतीकों का प्रयोग अपने भावों की सहज अभिव्यजंना के लिए किया है। कभी-कभी गूढ़भाव सामान्य शब्दों के माध्यम से अभिव्यक्त नहीं हो पाते तो प्रतीकों का सहारा लेना पड़ता है। प्रतीकों का अपना स्वतंत्र अस्तित्व होता है। कवि अमूर्त को मूर्त रूप प्रदान करने के लिए विभिन्न प्रतीकों का सहारा लेता है। संत रविदास ने भी अपनी गूढ़ व्यंजना के लिए भिन्न-भिन्न प्रतीकों का प्रयोग किया है। प्रस्तुत शोध पत्र में संत रविदास की वाणी में प्रतीक योजना पर विचार किया गया है।

प्रस्तावना

प्रतीक शब्द की व्युत्पति के विषय में हिन्दी शब्द सागर में लिखा है कि- प्रतीयते अनेक रति प्रतीकम' अर्थात् जिसके माध्यम से किसी वस्तु या भाषा की प्रतीति हो या अभिव्यक्ति हो, वह प्रतीक है।1

गीता रहस्य में लोकमान्य तिलक ने प्रतीक को इस प्रकार व्याख्यायित किया है- प्रतीक प्रति अपनी ओर झुका हुआ। जब किसी वस्तु काकोई भाग गोचर होता है, फिर आगे उस वस्तु का ज्ञान हो, तब उस भाग को प्रतीक कहते हैं।

प्रतीक के विषय में डॉ. रामचन्द्र वर्मा ने लिखा है- चिह्न, आक्तिरूप, लक्षण, किसी के स्थान या बदले में रखी गई वस्तु, प्रतिमा, मूर्ति। वह जो किसी समष्टि के रुप में और उसकी सब बातों का सूचक या प्रतिनिधि हो।2

डॉ. भागीरथ मिश्र के अनुसार प्रतीक अपने रूप, गुण, कार्य या विशेषताओं के सादृश्य एवं प्रत्यक्षता के कारण जब कोई वस्तु या कार्य किसी अप्रस्तुत भाव, विचार, क्रियाकलाप, देश, जाति आदि का प्रतिनिधित्व करता हुआ प्रकट किया जा सकता है, तब वह प्रतीक कहलाता है।3

उपर्युक्त विवेचन के उपरांत यह स्पष्ट हो जाता है कि प्रतीकों का स्वतंत्र अस्तित्व है तथा इसमें लक्षणा एवं व्यंजना की प्रधानता विद्यमान है। वह स्वयं को प्रस्तुत नहीं करता, बल्कि किसी अन्य का परिचय करवाने में सहायता करता है। प्रतीक का संबंध, बौद्धिकता, मानसिकता एवं रहस्यात्मकता से होता है। प्रतीक अनेकार्थी होते है। इन पर देश काल वातावरण, संस्कृति, परम्परा आदि का प्रभाव पड़ता है।

'प्रतीक' शब्द साहित्य में प्रयुक्त विशेष भाव या अर्थ को प्रकट करने वाले शब्द होते हैं जिनमें सादृश्य धर्म के साथ-साथ नयापन होता है। जब कवि अमूर्त सता को मूर्त रुप देने की कोशिश करता है तो वह किसी अन्य साधन से स्पष्ट नहीं हो पाती तो वह प्रतीकों का सहारा लेता है।

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 नवम्बर 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

भाषा को अर्थवान बनाने में प्रतीकों का बहुत महत्व है। वे किसी भाव स्थितियां अर्थ का संकेत बनाकर प्रयोग किए जाते हैं। प्रतीक कवि के व्यक्तिगत ज्ञान, दर्शन तथा सांस्कृतिक स्तर को भी व्यक्त करते हैं। इनसे कवि की भाव दशा का बोध हो जाता है। संत रविदास वाणी में भावनात्मक, रुपात्मक दार्शनिक, साधनात्मक, पारिभाषिक, गुरु, परमात्मा, संख्यावाचक तथा विर्पयय प्रतीकों का प्रचुर प्रयोग हुआ है।

भावात्मक

संत रविदास ने परमात्मा के साथ भावात्मक संबंध जोड़कर अपनी रहस्य भावना प्रकट की है। उन्होंने दाम्पत्य, वात्सल्य एवं दास्य भाव के साथ अपनी व्यंजना की है। उनकी आत्मा सांसारिक संबंधों को छोड़कर प्रियतम से नाता जोड़ चुकी है। सारा संसार उनके लिए संयोग से उल्लास और वियोग में अंगार बन जाता है। संत रविदास ने अपनी वाणी में दाम्पत्य के संयोग और वियोग दोनों का ही वर्णन किया है, कुछ उदाहरण द्रष्टव्य हैं -

दाम्पत्य प्रतीक

i) बौरी करि लै राम सनेहा
संग सहेली ब्याह चली सब छांडि नेहरि रा गेहा।4

ii) जौ लौं पिउरा मन नांहि आई, का सोरह स्यंगार बनाई/सोई सती रविदास बखानी, तन मन स्यू पिउ रंग समानी 5

iii) सहु की सार सुहागिनी जानै तजि अभिमानु सुख रलीआं मानै6 तो कहीं पर परमात्मा के साथ पिता-माता, सुत, सेवक का संबंध जोड़कर अपनी भक्ति भावना प्रकट करते हैं-

वात्सल्य प्रतीक

i) तुम्हहि मात पितु मेरो, हौ मसकीन अति भोरा7

ii) ऐ सबु संगि दिवस च्यार के, घर दारा सुत पित मात रे 8

iii) सुत सेवक सदा असोच, ठाकुर पितहि सब सोच 9

इसी प्रकार एक अन्य पद में रविदास ने सेवक-सेव्य भाव द्वारा चन्दन, पानी, चंद, चकोर, दीपक बाती, मोती आदि के गूढ़ प्रतीकों द्वारा दास्य भाव की अभिव्यक्ति की है-

दास्य प्रतीक

प्रभु जी तुम चंदन हम पानी, जाकी अंग अंग बास समानी।

प्रभु जी तुम घन हम मोरा, जैसे चितवत चंद चकोरा।

प्रभु जी तुम दीपक हम बाती, जाकि जोति जरै दिन राती

प्रभु जी तुम मोती हम धागा, जैसे सोनहि मिलत सोहागा।

प्रभु जी तुम स्वामी हम दासा, ऐसी भगति करै रैदासा।।10

दार्शनिक प्रतीक

रविदास की ब्रह्म संबंधी 'धारणा में समन्वय दिखाई देता है। उन्होंने परमात्मा को गोविन्द, राम, हरि, माधउ, गिरिवर, कृष्ण, किस्म आदि विभिन्न नामों से संबोधित किया है। कवि ने राम और कृष्ण दोनों रूपों को अभिन्न माना है। उनका ब्रह्म घट-घट वासी है जिसका वर्णन बुद्धि द्वारा असम्भव है, द्रष्टव्य है-

i) ब्रह्म

बाजीगर सूं राचि रहीऐ, बाजी कू मरम इनि जाना
बाजी झूठ सांच बाजीगर, जाना मन पतिआना।11

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 नवम्बर 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

क्रिस्न करीम राम हरि राघव, जब लग ऐके ऐक नहीं पेख्या
वेद कतेब कुरान पुराननि, सहजि एक नहीं देख्या।12
जउ तुम गिरिवर तउ हम मोरा, जउ तुम चंद तउ हम भए हैं चकोरा13
भाई रे! राम कहां है मोहि बताओ, सति राम ताके निकट न आयो14
माधउ सत्संगति सरनि तुमारी, हम अउगुन तुम्ह उपकारी15

ii) जीवात्मा

संत रविदास ने जीवात्मा को हंस का प्रतीक माना है-

हंस पखेरु चंचलु भाई, समुझि षेषि मन मांहि
प्रतिपलु मीचु गरासै देही, फुनि रैदास चेतहु नांहि16

iii) जगत

संत रविदास ने जगत को नश्वर बताते हुए उसे दुःख की खेती कहा है-

इहु जग की खेतरी इहु जानत सबकोय
ग्यानि काटहि हरि नाम सौं, मुरषि काटहिं रोय17

iv) माया

संत रविदास ने माया के नश्वर रूप व उसके थोथेपन पर प्रकाश डाला है। उन्होंने अपने काव्य में विद्या तथा अविद्या दोनों प्रकार की माया का वर्णन किया है। उन्होंने माया को ठगिनी, झूठी, अविद्या, द्वारा आदि नामों से अभिहित किया है-

झूठ माया जग डहकाया, तौ तीनि ताप दहै रे
कहै रविदास राम जपि इसना, माया काहू कै संग न रहै रे18

साधनात्मक प्रतीक

संत रविदास ने अपनी हठयोग साधना द्वारा भी रहस्य भावना प्रकट की है। उन्होंने गंगा, जमुना, इड़ा पिंगला, अनहद, त्रिकुटी, चन्द, सहज सूनि, उल्टी गंग, सहज, अखिल सुरति आदि प्रतीकों का प्रयोग किया है-

i) गंगा जमुनि

उल्टी गंग जमुनि महिं ल्यावौ बिन ही जल मज्जन है आवौ19
लोचन भरि-भरि व्यंभ निहारौ, जोति बिचारि न अवर बिचारौ

ii) गगन मंडल

गंगन मंडल मैं आरति कीजै, नादबिंद इकमेक करीजै20

iii) इला पिंगला

इला पिंगला सुषमण नारी, जा मैं चिंतन धरै
सहस्रार मंह भंवर गुफा है, भंवरा गुंज करै21

iv) सहज

भाई रे सहज बंदौ सोई, बिन सहज सिध न होई22

v) सूनिमंडल

भगति न सूनि मंडल घर सोधे, भगति न कछु दिखाइवे23

vi) त्रिकुटि

धीव अखंडा सो है बाती, त्रिकुटी जोत जलै दिन राती24

vii) सूरति

प्रेम पाटी सुरति लेखनि करि हौं, ररा ममा लिखि अंक दिखाऊं25

viii) अखिल

हम मानो अखिल सूनि मन सोध्यौ, सब चेतनि सुधि पाई
ग्यान ध्यान सबही हम जानौ, बूझौ कौन सू जाई26

संख्यावाची प्रतीक

संत रविदास वाणी में संख्यावाची विशेषणों का भी प्रयोग हुआ है, जैसे

पंच दोष असाध जामहि ता की केतिक आस27
जे उहु अड़सठ तीरथ न्हावै, जे उहु दुवादस सिला पुजावै28

रूपात्मक प्रतीक

संत रविदास वाणी में रूपक के माध्यम से भी अभिव्यंजना की है- कहीं उसे माटी का पुतरा तो कही घास की टाटी बताकर मानव शरीर की नश्वरता का प्रतिपादन किया है-

माटी को पुतरा कैसे नचतु है
देखै देखै सुनै बोले दऊरिउं फिरतु है29
ऊंचे मंदर साल रसोई, एक घरि फुनि रहतु न होई / हहु तनु ऐसा जैसे घास की टाटी जलि गइओ घासु रलि गइओ माटी30
देहु कलाली ऐक पिआला, ऐसा अवधू होई मतवाला31

काम

संत रविदास ने विषय वासनाओं के लिए पंचहु, पंच कामी चकोरा आदि प्रतीकों का प्रयोग कर मानव को सावधान किया है-

काम क्रोध मारआ मद मतसर इन पंचहु मिलि लूटे32
विसा सक्त रहियो निसवासर अजहुं नहि अघानो
कामी कुटिल लवार, कुचाली, समझइ नहीं समुझानो33

स्वतंत्रता

संत कवि रविदास ने स्वतंत्रता के लिए बेगमपुरा प्रतीक का सुन्दर प्रयोग किया है, वहां न किसी प्रकार का दुख है, न कलेश, वहां पर किसी प्रकार का टैक्स भी नहीं लगता। वह ऐसा स्थान है जहां पर पंहुचकर साधक परमात्मा में लीन हो जाता है- बेगमपुरा शहर को नाउं, दुख अंदोहु नहीं तिहि ठाऊं / ना तसबीस खिराज न मालु, खौफु न खता न तरसु ज्वालु34

विपर्यात्मक प्रतीक (उलटबांसी)

संत रविदास वाणी में उलटबांसियों का कम ही प्रयोग हुआ है, द्रष्टव्य है-

देहु कलाली ऐक पिआला, ऐसा अवधू होई मतवाला
कहै कलाली पिआला देऊं, पीवन हारै का सिर लेऊं35

निष्कर्ष

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि संत रविदास ने अपने भावों की सहजता के लिए विभिन्न प्रतीकों का प्रयोग किया है। कवि ने अपने आराध्य के साथ विभिन्न प्रकार के संबंध स्थापित करके भावात्मक, प्रतीकों, ब्रह्म, जीव, जगत, माया तथा सगुणों एवं निर्गुण आदि के रूप में वर्णन करके दार्शनिक प्रतीकों योग साधना की प्रचलित शब्दावली का प्रयोग करके साधनात्मक प्रतीकों तथा कहीं-कहीं उलटबांसियों का चित्रण भी प्रतीकों के माध्यम से किया है। उनके द्वारा प्रयुक्त प्रतीकों में भावात्मक प्रतीक में अधिक प्रभावित करते हैं। इस तरह उन्होंने अनेक प्रतीकों का प्रयोग करके अपने भावों को सुन्दर और सबल अभिव्यक्ति दी है।

संदर्भ ग्रन्थ

1. लोकमान्य तिलक, गीता रहस्य, केसरी आफिस पूजा संस्करण-1962, पृष्ठ 415
2. डॉ. रामचन्द्र वर्मा, प्रामाणिका हिन्दी कोश, हिन्दी मानक कोश, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, पृष्ठ 836
3. डॉ. भागीरथ मिश्र, काव्य शास्त्र, विश्वविद्यालय प्रकाशन चौक, वाराणसी, 1986 पृष्ठ 263
4. बी.पी. शर्मा, संतगुरु रविदास वाणी, सूर्य प्रकाशन, नई दिल्ली, 1978, पद 52

5. वही, पद-57
6. वही, पद-86
7. वही, पद-73
8. वही, पद-67
9. वही, पद-20
10. वही, पद-66
11. वही, पद-11
12. वही, पद-5
13. वही, पद-63
14. वही, पद-10
15. वही, पद-45
16. वही, पद-74
17. वही, पृ.141-साखी
18. वही, पद-55
19. वही, पद-75
20. वही, पद-176
21. वही, पद-158
22. वही, पद-49
23. वही, पद-135
24. वही, पद-176
25. वही, पद-94
26. वही, पद-6
27. वही, पद-47
28. वही, पद-130
29. वही, पद-121
30. वही, पद-123
31. वही, पद-50
32. वही, पद-14
33. वही, पद-145
34. वही, पद-136
35. वही, पद-50